International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-06-2024, Accepted: 07-07-2024, Published: 30-07-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 23-26

हिंदी की प्रतिबंधित कविताओं मे राष्ट्रीयता (विशेष संदर्भ सात क्रांतिकारी जब्तशुदा काव्य संग्रह)

ज्योति[1], प्रवीण शर्मा[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत
[2] सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, सेठ बिहारी लाल छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय, अनूपगढ़, राजस्थान, भारत

सारांश
"हिंदी की प्रतिबंधित कविताओं मे राष्ट्रीयता" (विशेष संदर्भ सात क्रांतिकारी जब्तशुदा काव्य संग्रह) शोधालेख में औपनिवेशिक कालीन भारतवर्ष के यथार्थ पर आधारित है। प्रस्तुत शोधालेख इन जब्तशुदा काव्य संग्रह में वर्णित विषय वस्तु को उल्लिखित करता है । समाज का प्रत्येक वर्ग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित रहा तो साहित्य जो समाज का प्रतिबिंब होता है वह इससे कैसे अछूता रहता? औपनिवेशिक कालीन भारतवर्ष के तत्कालीन यथार्थ पर आधारित इन प्रतिबंधित हिंदी कविताओं में राष्ट्रीयता,स्वाधीनता का स्वर मुखरित हुआ है। इन प्रतिबंधित हिंदी कविताओं में ब्रिटिश हुकूमत की गुलामी के दौरान भारतीय समाज का, तत्कालीन परिस्थितियों, राष्ट्रीय भावों, पराधीनता के बंधनों को तोड़ फेंकने का आदि का बड़ा हृदयग्रही चित्रण किया है।

मूल शब्दः राष्ट्रीयता, जब्तशुदा, औपनिवेशिक, ब्रिटिश हुकूमत

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में भारतवर्ष का औपनिवेशिक कालीन अतीत भी अंकित है। इस औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष में समाज के हर वर्ग अपनी भूमिका का निर्वहन किया,जिससे साहित्य भी अछूता नहीं रहा। भारत के औपनिवेशिक काल के दौरान लिखें गये हिंदी काव्य में राष्ट्रीयता के भावों की ओजस्वी अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। हिंदी काव्य में साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्रीयता के भावों से युक्त काव्य की सृजना कर जन मानस में देश को पराधीनता के बंधनों से मुक्त कर स्वाधीनता का शंखनाद किया, जिससे ब्रिटिश सत्ता को अपना अस्तित्व संकट में नजर आया और इस काव्य को प्रतिबंधन की ओढ़ में जब्त कर लिया गया।

गुलामी के बंधनों में जकड़े हुए भारतवर्ष की दुर्दशा एवं भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष का प्रभाव कवि को अपने भावों को व्यक्त करने से नहीं रोक पाया। हिंदी की इन प्रतिबंधित कविताओं में गुलामी के बंधनों को तोड़कर फेंक देने की हुंकार है। ब्रिटिश सत्ता को अपना साम्राज्य डगमगाता प्रतीत होने लगा जिससे इन कविताओं को साहित्य की अन्य विधाओं के समान न केवल प्रतिबंधन का शिकार होना पड़ा बल्कि उनके रचनाकारों को भी कारागार यातनाओं को भी सहा।

"जिन्होंने अपनी लेखनी के कारण औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा कालकोठरियों में तिल – तिल कर मरने के लिए डाल दिए जाने के बावजूद, अपनी अभिव्यक्ति के अधिकार को मरने नहीं दिया। ऐसी सीलनभरी, अंधेरी कालकोठरियों में पत्थरों,टूटे हुए दाँतों और नाखूनों से दीवारों पर खुरचे हुए इंकलाबी हर्फ भारत की स्वतंत्रता के लिए उनके जिजीविषा के जिंदा गवाह हैं"1

अपने देश के प्रति प्रेम, समर्पण, त्याग, बलिदान की भावना ही राष्ट्रीयता कहलाती है। यह राष्ट्रीयता अपने देश के प्रति प्रेम, गर्व का भाव, सभ्यता – संस्कृति के प्रति गर्व का भाव,राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक दशा में सुधार और प्रयत्न के भाव के रूप में प्रस्फुटित होती है। डॉ. भावना अपने 'प्रतिबंधित हिंदी नाटकों की अंतर्वस्तु' आलेख में इस संबंध में लिखती हैं–

"अंग्रेजी राज हमेशा से ऐसे साहित्य के खिलाफ रहा जिसका संबंध राजनीति से हो। साहित्य लेखन से अंग्रेजी सरकार को परहेज नहीं था। उनके लिए जनता का जागरूक होना घातक था।ब्रिटिश सरकार कभी नहीं चाहती थी कि आम जनता देश की राजनीतिक पृष्ठभूमि से परिचित हो। सत्ता की हर गतिविधि पर नजर रखना, जो देश के हित और अहित का कारण बनती है, साहित्य की यही राजनीतिक चेतना अंग्रेजों के लिए घातक थी। निश्चित रूप से प्रतिबंधित रचनाओं में इसी उथल–पुथल का स्वर व्यंजित हुआ था जिससे ब्रिटिश सरकार भयभीत थी।"2

डॉ.मधुलिका बेन पटेल ने ' प्रतिबंधित हिंदी कविताएं' पुस्तक में जिन प्रतिबंधित सात क्रांतिकारी जब्तशुदा काव्य संग्रह की चर्चा की है।उन कविताओं में जहां औपनिवेशिक दौर के दौरान के भारत की यथार्थ स्थिति के बड़े ही हृदयग्राही अभिव्यक्ति मिलती है वही भारतीय जनमानस के हृदय के उद्गारों को उद्घाटित किया गया है।

पहला प्रतिबंधित काव्य संग्रह 'राष्ट्रीय आल्हा' जिसके लेखक बाबूराम पैंगोरिया है। यह पुस्तक 1930 में जैन प्रेस आगरा से प्रकाशित हुई। बाबूराम पैंगोरिया द्वारा राष्ट्रीय आल्हा काव्य संग्रह अनेक कविताओं का संकलन है। यह काव्य संग्रह भारत के भूत, वर्तमान और भविष्य की पृष्ठभूमि पर आधारित है। जहां इसमें भारत के स्वर्णिम इतिहास की अभिव्यंजना है वही अंग्रेजी शासन के दौरान पराधीनता के बंधनों से झकड़े भारतवर्ष की दारुण दशा को प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य संग्रह में भारत की अतीत संस्कृति,इतिहास का वर्णन,ब्रिटिश शासन द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों, जुल्मो और शोषण आदि की घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। ब्रिटिश शासन काल से पूर्व भारत वर्ष की स्थिति के संबंध में लेखक लिखते हैं–

"भारतवर्ष देश के माहि नहीं चोर का नाम निशान।।
माल करोडो का बिन मलिक रहता पड़ा जहां तहां जान।"3

ब्रिटिश हुकूमत द्वारा सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध विश्व पटल पर अपनी सभ्यता संस्कृति का परचम फहराने वाले भारत वर्ष की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व्यवस्था को छिन्न भिन्न करके रख दिया।

"स्वीकार कर के कहते हैं सर्वनाश का यही प्रमाण।।
अंग्रेजी शासन से है गयो सर्वनाश भारत का जाय।।"4

किस प्रकार अंग्रेजों की कर संग्रहण प्रणाली के कारण भारतीय कृषि उद्योग धंधे नष्ट हो गए कृषक, मजदूर बनने को विवस हो गए का बड़ा मार्मिक चित्रण करते हुए लेखक लिखते हैं–

"कैसा सुख भारत के माहि आधे कृषक जाने नहि।
बृटिश भारत के आधे कृषक कैसे अपना करें निर्वाह।।
वर्ष दिनों में एक दिन भी वह भरपेट अन्न नहि खाय।
यहां तक उनका ज्ञान नहीं है कैसा सुख खाने के माहि।।
खाली भरा पेट नहा जाने नहीं सुख का नाम निशान।"5

'राष्ट्रीय आल्हा' संपूर्ण काव्य संग्रह में अंग्रेजों की दुष्टतापूर्ण औपनिवेशिक नीति, किसानो, मजदूरों, पशुओं की दारुण स्थिति का वास्तविक चित्रण किया गया है। अन्न को उपजाने वाले किसानों को भरपेट खाना भी नसीब नहीं होता, किस प्रकार से वे मजदूर बनने को विवश हो, दूसरे देशों में मजदूरी करने को विवश हो गए हैं–

"अब कितने बाहर भारतवासी उनका भी कुछ करूं बखान।
भूख की ज्वाला ने जब मारे पहुंचे परदेशन में जाय।।
उनकी संख्या इस प्रकार है फिजी पहुंचे साठ हजार।"6

औपनिवेशिक दौर के दौरान प्रतिबंधित इन कविताओं में विषय वैविध्य होने पर भी एक बात सामान्य थी– देश–प्रेम। उन सभी रचनाओं को प्रतिबंधन का सामना करना पड़ा जिसमें अंग्रेजी साम्राज्य की खिलाफत और स्वतंत्र भारत की कल्पना की गई हो, दूसरे देश के स्वतंत्रता संग्राम का वर्णन हो आदि।
"कविता की समझ में भूमिका दोहरी है। एक और तो वह समाज से प्रभाव ग्रहण करती है दूसरी ओर समाज को प्रभाव ग्रहण करती है वह अपने समय को अंकित करते हुए भी कभी–कभी इस समय के पर जाकर ने मूल्य स्थापित करती है, उसकी भूमिका मनुष्य को अधिक मानवीय और अधिक बेहतर मनुष्य बनाने की होती है। जहाँ वह उसके कोमल मनोभावों का स्पर्श करती है, वही वह मनुष्य की चेतना को भी जागती है और उसमें नई स्फूर्ति और नया उत्साह भरती है। कविता का इतिहास साक्षी है कि कविता ने अलग–अलग युग में जन चेतना को जागृत किया है और उसे संघर्ष के लिए प्रेरित किया हैस कविता ने स्वयं हमारी आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद फूंकते हुए उसने आम आदमी को जान देने तक के लिए प्रेरित किया और लोगों ने हंसते–हंसते अपने वतन के लिए अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी।"7
'अंग्रेजों की इस तौर से करो बोलती को बंद' पुस्तक के प्रकाशक पंडित बाबूराम दौनेरिया है। यह पुस्तक भारत बुक एजेंसी देहली से प्रकाशित है। इस पुस्तक में अनेक कविताओं का संग्रह है। यह संग्रह ओजस्वी वाणी से पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर ब्रिटिश सत्ता को भारत से उखाड़ फेंकने,स्वतन्त्रय पथ पर प्राणों की आहुति देकर भारत माता को आजाद करवाने की अपील करता है–

"नेहरू से योद्धा चमक उठे दुष्टों का मान घटाने को।।
अब समय नहीं सोने का आलस में आयु खोने का
भारत वासी अब जाग उठो चोरों से माल बचाने को।एक।
कुछ उन वीरों का ध्यान भी है बलिदान करी जीने जान भी है
उठो वीरों उन के साथ चलो जो चल दिये जैल बसाने को
एक अद्भुत शक्ति जाग।"8

भारतीयों में स्वाभिमान की भावना जागृत करते हुए लेखक लिखते हैं कि अंग्रेजों की भी इस तौर से बोलती को बंद कर दो–

"ईश्वर के सिवाय मत डरो किसी के कोप से,
मारे अगर तुम्हें कोई बंदूक तोप से।
आत्मा अमर है मरता कभी नहीं।
गीता में कृष्ण ने अर्जुन से यही कहा
गांधी भी यही कहते हैं सब को मिले आनंद।
योरूप की फिर तो यों बोलती हो बंद।।1।।"9

'नहीं रखनी नहीं रखनी सरकार जालिम नहीं रखनी' कविता में ब्रिटिश सत्ता के शोषण, जुल्मों को उजागर किया गया है। कवि ह्रदय के उद्गार इस प्रकार हैं–

"आई थी व्यापार करने को बनी गले का हार।।
जालिम नहीं रखनी।।1।।
जलियां वाले बाग के अंदर निर्दोषों पर गोली चलाकर मारे कई हजार जालिम नहीं रखनी।।2।।
इस की लूट से बचा न कोई बढ़ई, चमार, लुहार।
जालिम नहीं रखनी।।3।।
गरीब किसान लगान लगाकर भूख से दिये हैं मार। जालिम नहीं रखनी।।4।।"10

'अंग्रेजों की इस तरह से करो बोलती बंद' संपूर्ण काव्य संग्रह में अंग्रेजी शासन के शोषण पर कटाक्ष करते हुए भारतीयों में स्वदेशाभिमान को जागृत किया गया है। शहीदों के संदेशों को को याद दिलाते हुए देश के लिए प्राणों की आहुति का आवाहन किया है, वही जो लोग अंग्रेजी शासको की चापलूसी कर रहे हैं उनकी जी हजूरी कर रही है उनको लताड़ा गया है–

"इस पेट खातिर धर्म के दी तिलांजलि
भाइयों के खून के लिये पिस्सू जरूर हूं।
माटिंग स्वराज में कभी जाता नहीं हूं में
साहब की चापलोसी में आगे जरूर हूं।।
चंदा न कौड़ी मैं दू निज देश के लिये
परदेसियों से रिश्वत लेता जरूर हूं।।"11

इस संग्रह में भारत माता का स्वतंत्रता रूपी श्रृंगार करने के लिए स्वतंत्रता संग्राम की वेदी में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों को नमन करते हुए उनसे प्रेरणा लेने का आवाहन किया गया है–

"जालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं
हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं
परयाद रखना तुम भी जालिम ये रह न जाये।
कुछ दिन में हम भी वापिस अब फेर आ रहे हैं।।1।।हम.
देखो हमारा हक है हम हिंदी के हैं मालिक।
इस हिंदी के लिये हम ये सर चढ़ा रहे हैं,
लानत है यार उनको जो हैं गुलाम इन के।
कहने से दुश्मनों के छुरिया चला रहे है।"12

'अंग्रेजों की अकड़ फूं निकल गई' पुस्तक बाबुराम दौनेरिया द्वारा प्रकाशित है।यह काव्य संग्रह भारतवर्ष की स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमे लेखकों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए भारतीय जनमानस को ललकारा है, जनता को विदेशी सरकार के खिलाफ आवाज उठाने का अपील इस पुस्तक में मिलती हैं।संपूर्ण पुस्तक में राष्ट्रीयता के भावों की

अभिव्यक्ति हमें गीतों एवं वचनों के रूप में देखने को मिलती है–

गजल
"मिटा देंगे हुकूमत को हम ऐसा कर के छोड़ेंगे
हम अपने भारत पर खुद अपना कब्जा करके छोड़ेंगे
तू ऐ बादे सबा जाकर यह पंजम जार्ज से कह दे

कि हम इंग्लैंड वालों को लिफाफा करके छोड़ेंगे
गजब की बेड़ियां डाली है जो जालिम ने पैरों में
इसी झंकार से हम हशर बरपा करके छोड़ेंगे
न छोड़े जीते जी दुश्मन का पीछा हम वह काले हैं
अगर छोड़ेंगे तो दुश्मन को मुर्दा करके छोड़ेंगे।"[13]

भारतीय जनमानस की आवाज एवं गांधीवादी दर्शन की अभिव्यक्ति भी इन कविताओं में देखने को मिलती है। स्वराज, स्वदेशी का आवाहन इन कविताओं और गजलों में देखने को मिलता है यथा–

"गाय ओर सूअर की चर्बी खून से कपड़े बने।
ऐसे नापकों के कपड़ों को जलाना चाहिये।
अब विदेशी को न बरते कपड़ों हो या कोई चीज।
ऐसे सब सामान पर लाहौल पढ़ना चाहिये।
हुक्म है गांधी का वह सब वस्त्र खद्दर के बने।।
शुद्ध खद्दर की लंगोटी तक बननी चाहिये।"[14]

प्रतिबंधित कविताओं, गीतों, गजलों का संकलन 'अहिंसा की शमशीर' पुस्तक का प्रकाशन 1930 ई. में खिचरी समाचार प्रेस, मिर्जापुर से हुआ था। इस पुस्तक के प्रकाशक ठाकुरप्रसाद मकरीखीह मिरजापुर है। प्रतिबंधित कविताओं के इस संग्रह में भी स्वदेशी का प्रचार, स्वराज की मांग, भारतीय तिरंगे का विश्व पटल पर परचम लहराना, पराधीनता के बंधनों को तोड़ना, जालिम सत्ता का दमन करना, अहिंसावादी मार्ग पर चलते हुए स्वतंत्रता की प्राप्ति आदि भावों की अभिव्यक्ति मिलती है।
अहिंसा की शमशीर पुस्तक मे संकलित कविता' झंडा ऊंचा रहे हमारा,कविता में देश प्रेम के भावों की अभिव्यक्ति बड़े ही सुंदर तरीके से की गई मिलती है यथा–

"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा
सदा शक्ति बरसाने वाला प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरसाने वाला मातृ भूमि का तन मन सारा
स्वतंत्रता के भीषण रण में लख कर बड़े जोश क्षण क्षण में।"[15]

खुद की आहुति देकर आजादी के स्वप्न को साकार करने की कामना इस काव्य संग्रह में दिखाई देती है। 'राष्ट्रीय आल्हा यानी भगत सिंह की लड़ाई' प्रतिबंधित पुस्तक के लेखक कामरेड सूर्यप्रसाद मिश्र है। इस पुस्तक के प्रकाशक रामनारायण त्रिपाठी हैं। इसका प्रकाशन खाला गांव, देशपुर कानपुर से हुआ था। इसका प्रकाशन वर्ष ज्ञात नहीं मिलता।
इस काव्य संग्रह में राष्ट्रीय आल्हा अर्थात भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले देश भक्तों, बलिदानियों का त्याग,, प्रेम, अंग्रेजी सत्ता की शोषणकारी नीतियों, कानून का विरोध आदि की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। प्रस्तुत काव्य संग्रह का आरंभ ईश वंदना, भारत माता की वंदना से एवं उन स्वतंत्रता सेनानियों की वंदना से आरंभ होती है जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम रूपी वेदी में अपने प्राणों की आहुति देकर भारत मां को स्वतंत्रता का गहना पहनाया।
इस काव्य संग्रह में संकलित कविताओं में ब्रिटिश हुकूमत के काले चिट्ठे को सामने प्रस्तुत किया है। भारतीयों में आजादी की अलख को जागृत किया है।
भारतीयों की दुर्दशा, अंग्रेजी शासन की शोषणकारी नीतियों का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं–

"माल उड़ावे मेरे घर का औ फिरी हमको रहे सताय।
धांधा गर्दि यह खासी है मालदार जो रहे मचाय।।
कायम तौलो यह दुनियां में जोलो हममें होय न पेल।
लूट बंद तो तबही होइहैं जबहि एका करे किसान।।
उलट पुलट होवे दुनियां में मिटे डकैतन को निशान।
कबहू हमने ना यह सोची काहे दुखिया रहे किसान।।"[16]

श्री समृद्धि से युक्त भारतवर्ष का किस प्रकार से आर्थिक शोषण किया गया। भारतीय धन संपदा को विदेशों में भेजा गया और यहां के भारतवासी को पेट भर खाना भी नसीब नहीं था।यहां तक की ब्रिटिश सत्ता ने ऐसे नियम बनाए की कोई भी भारतीय उच्च पदों पर आसीन ना हो सके और न ही विदेशों में किसी पद पर जा सके। ब्रिटिश साम्राज्य के सुरक्षा प्रहरी के रूप में रॉलेट एक्ट को भारत में लाया गया। इस एक्ट के कारण न तो कोई भारत में सभा कर सकता था, न हीं व्यक्तियों का समूह इकट्ठा हो सकता था, न हीं कोई लेख अखबार में छप सकता था, जो ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ हो। भारतीय जनता में अंग्रेजी शासन की आर्थिक, राजनीतिक नीतियों के प्रति आक्रोश चरम सीमा पर था। अंग्रेजी शासन व्यवस्था के विरोध में समस्त भारतीय एक हो चुके थे।गांधी के असहयोग आंदोलन द्वारा रॉलेट एक्ट की निंदा की गई, बहिष्कार किया गया। अंग्रेजी शासन व्यवस्था को अपना शासन डगमगाते प्रतीत होने पर भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को जेल भेजा गया।मोतीलाल, जवाहरलाल नेहरू, देशबंधु ,श्री आर सि दास,राजेंद्र बाबू, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, राज बहादुर आदि स्वतंत्रता सेनानियों को जेल भेजा गया,फांसी दी गई आदि का बड़ा ही यथार्थ चित्रण इस काव्य संग्रह में देखने को मिलता है।
'आग का गोला' पुस्तक प्रतिबंधित कविताओं का संग्रह है। जिसके संग्रहकर्ता सेवक कुंदनलाल है। यह पुस्तक किसानों पर,उनके शोषण पर आधारित है। इस काव्य संग्रह की विषय वस्तु जनसाधारण की पीड़ा को उजागर करती है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का प्रमुख उद्देश्य भारत की धन संपदा को लूट कर विदेशों में लेकर जाना था।इस धन संपदा का एक बहुत बड़ा हिस्सा किसानों से भू राजस्व के रूप में प्राप्त किया जाता था और यह भू राजस्व अर्थात कर इतना अधिक था की किसान दिन–ब–दिन गरीब होते गए, पेट भरने के लिए भी भोजन तक उनको नसीब नहीं था। अंग्रेजों का अमानवीय व्यवहार इस हद तक पहुंच गया कि वह कृषक से मजदूर बन गए।हिंदुस्तान की इस खौफनाक स्थिति को इस काव्य संकलन में प्रस्तुत किया गया है।अंग्रेजी सरकार द्वारा भारतीयों की दुर्दशा का बखान करने वाली ,शोषण के विरुद्ध जागृत करने वाली, अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध खिलाफत में दृष्टिगोचर होने पर इस रचना को तुरंत जब्त कर लिया गया।
इस काव्य संग्रह की कविता किसानों की दशा में किसानों की दयनीय स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है–

"तनु दूबरो रोगिल हाल बुरो,
मुखरा जिनके लरिकान को हैं।
नहि पास है अंगा चिथरन को।
नित होत लगादो लगान को हैं।
चले आगे लखयों कछु दूरिही से
परि फूस की झोपड़ी टूटी पुरानी।
चहुंओर दीवार है फूटी है भई
बड़े–बड़े छेद बड़ी बुरी छानीं।।"[17]

'आजादी का बिगुल' काव्य संग्रह के संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक क्षमाचंद्र रस्तोगी है। कुछ कविताओं एवं 16 गजलों का संग्रह 'आजादी का बिगुल' प्रतिबंधित काव्य संग्रह में मिलता है। इसका प्रकाशन वर्ष ज्ञात नहीं है। यह पुस्तक महात्मा गांधी की 11 शर्तें एवं देश–प्रेम के भावों पर आधारित है–

अभिलाषा कविता में एक हिंदुस्तानी की इच्छा क्या है?की सुंदर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है–

"बतायें तुम्हें हम की क्या चाहते हैं।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं।।
अगर वह न अपनी गुलामी से छोड़े।
तो फिर जेल की हमस जा चाहते हैं।।
रहे फूसों खपरैल के घर में क्यों हम।
उसी पक्के घर में रहा चाहते हैं।।"[18]

इसी प्रकार से भारत भूमि को आजादी का चोला पहनाने के लिए चाहे कितनी भी यातनाएं सहनी पड़े वह देश प्रेम के आगे कुछ भी नहीं–

गजल

"ऐ यारों खेल समझते हैं हम जेल में आने जाने को।
जाने है हमारी नजरे वतन निकले हैं नजर चढ़ाने को।।
हम अपने वतन के सेवक हैं हम अपनी कौम के खादिम हैं।
बच्चों का खेल समझते हैं हम मरने को मिट जाने को।।"[19]

भारत के औपनिवेशिक कालीन यह प्रतिबंधित हिंदी काव्य संग्रह पराधीन भारत का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।इस प्रकार से प्रतिबंधित हिंदी काव्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रलेख है जिसके लेखकों का उद्देश्य अपने रचनाओं के माध्यम से जनता में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना, गुलामी के बंधनों को तोड़कर,अपने अतीत गौरव को याद करना, संपूर्ण समाज को अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एकजुट करना था। इन काव्य संग्रह के आधार पर यह निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि यह वह समय था जब संपूर्ण देश स्वतंत्रता के लिए हुंकार भर रहा था। जनमानस में ब्रिटिश हुकूमत के प्रति आक्रोश प्रबल था। समाज के विभिन्न वर्गों ने अपने–अपने तरीके से इस स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका का निर्वहन किया।

संदर्भ

1. शुक्ल, डॉ. नरेंद्र. ब्रिटिश राज और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रस्तावना. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2018.डॉ. भावना, प्रतिबंधित हिंदी नाटकों की अंतर्वस्तु (आलेख). चित्तौड़गढ़ः अपनी माटी पत्रिका प्रतिबंधित साहित्य विशेषांक, 2022 पृ. सं. 176
2. पटेल, डॉ. मधुलिका बेन. प्रतिबंधित हिंदी कविताएं (सात क्रांतिकारी जब्तशुदा काव्य संग्रह). नई दिल्लीः स्वराज प्रकाशन, 2016. पृ. सं. 129
3. वही पृष्ठ संख्या 126
4. वही पृष्ठ संख्या 137
5. वही पृष्ठ संख्या 131
6. आजादी की लड़ाई के जब्तशुदा तराने; भूमिका– प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार.
7. पटेल, डॉ. मधुलिका बेन. प्रतिबंधित हिंदी कविताएं (सात क्रांतिकारी जब्तशुदा काव्य संग्रह). नई दिल्लीः स्वराज प्रकाशन, 2016. पृ. सं. 147
8. वही पृष्ठ संख्या 144
9. वही पृष्ठ संख्या 147
10. वही पृष्ठ संख्या 151
11. वही पृष्ठ संख्या 152
12. वही पृष्ठ संख्या 160
13. वही पृष्ठ संख्या 163
14. वही पृष्ठ संख्या167, 168
15. वही पृष्ठ संख्या 173
16. वही पृष्ठ संख्या 192,193
17. वही पृष्ठ संख्या 206
18. वही पृष्ठ संख्या 205
19. डॉ रुस्तम राय प्रतिबंधित हिंदी साहित्य, भाग 2